

Class 17: Summary

1. हमने एक जरूरी चीज जानी कि सूत्रों में पिछले सूत्रों का अनुसरण चलता है
2. जैसे सूत्र **रूपिष्ववधेः** में सूत्र **मतिश्रुतयोर्निबन्धो द्रव्येष्वसर्वपर्यायेषु** की अनुवृत्ति से अवधिज्ञान में भी असर्वपर्याय की सीमा आ जाती है
3. अर्थात् अवधिज्ञान सिर्फ रूपी पदार्थों को असर्व पर्याय के साथ जानेंगे
4. अवधिज्ञान रूपी कर्म के माध्यम से आत्मा को जनता है मगर
5. यह आत्मा के सभी भावों को ग्रहण नहीं कर सकता
6. यह सिर्फ
 - कर्म के उदय से होने वाले औदयिक भाव
 - उपशम से होने वाले औपशमिक भाव
 - क्षयोपशम से होने वाले क्षयोपशम भाव **को बता देगा**
7. लेकिन क्षायिक भाव और पारिणामिक भाव को नहीं बता पाएगा
8. हमने जाना कि भव्य और अभव्य की पहचान भी अवधिज्ञान का विषय नहीं है
9. सूत्र 28 - **तदनन्तभागे मनपर्यस्य** में हमने जाना कि मनःपर्यय ज्ञान **अवधिज्ञान में** उत्कृष्ट सर्वावधिज्ञान का अनन्तवाँ भाग भी ग्रहण करने में समर्थ होता है
10. सूत्र 29 - **सर्वद्रव्यपर्यायेषु केवलस्य** में हमने देखा कि केवलज्ञान **सभी द्रव्यों और सभी पर्यायों को ग्रहण करता है**
11. **केवलज्ञान अनादि रूप वस्तु को अनादि रूप ही जनता है** और जो अनन्त रूप है उसको अनन्त रूप ही जानेगा
12. ज्ञान भी एक तुला के समान है और जैसे हर चीज को तोलने की तुला अलग-अलग होती है ऐसे ही हर संख्या को जानने वाला ज्ञान भी अलग-अलग होता है
13. मतिज्ञान, श्रुतज्ञान के माध्यम से हम संख्यात संख्या वाली चीजों को ही जान पाएँगे
14. अवधिज्ञान और मनःपर्यय ज्ञान से असंख्यात को

15. और केवलज्ञान से अनन्त संख्या को
16. केवलज्ञान से कोई भी चीज बाहर नहीं है
17. अनन्त भी एक प्रकार का नहीं, इनके प्रकार के होते हैं
18. इनका अपना एक गणित होता है
19. जैसे सिद्ध भी अनन्त हैं, अभव्य भी अनन्त हैं, भव्य भी अनन्त हैं, पुद्गल भी अनन्त हैं लेकिन इन सबकी अनन्तता अलग-अलग है
20. सिद्ध जीवों से भी अनन्त गुणे जीव एक निगोद जीव में रहते हैं
21. केवलज्ञानी के अनन्त को जानने के बाद, हमारे लिए जो ज्ञान आएगा वह केवल एक मौखिक, अक्षरात्मक श्रुतज्ञान होता है
22. केवलज्ञान में आगे के भव दिख रहे हैं तो सब कुछ निश्चित है हमें ऐसा नहीं मानना है
23. हमें सिर्फ केवल ज्ञान के स्वरूप को समझना है और उसका ही निश्चय करना